प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच०डी
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
सन्–2019

निर्देशिका
प्रो0 शर्मिला सक्सेना
हिन्दी विभाग (कला संकाय)

शोधार्थिनी
मोहिनी गुप्ता

हिन्दी विभागाध्यक्ष
प्रो० शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख
प्रो0 जे.के. वर्मा

(हिन्दी विभाग–कला संकाय)
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी दयालबाग आगरा–282005)

प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम

शोध परिचय :–साहित्य और समाज का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है, साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति होती है, इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज में जो कुछ भी व्याप्त है, वह साहित्यकार की संवेदना, चिंता और चिन्तन का विषय होता है, जिसकी अभिव्यक्ति के द्वारा समाज में वह अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज से संवाद स्थापित करता है और समाज की चिन्ताओं को साहित्य के पटल पर उभारता है।

मानव होने की सार्थकता हमारी संवेदनशीलता में निहित है। जब समाज का एक वर्ग हमारी संवेदनशीलता के चलते बदतर जीवन जीने को मजबूर हो तो यह हमारे मानव होने की सार्थकता पर प्रश्न चिह्न खड़ा करता है? कलात्मक प्रतिभा और गुणों से परिपूर्ण होने के बावजूद उभयलिंगी समुदाय अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत है। आज भी उभयलिंगी समुदाय को सामाजिक स्वीकार्यता की अपेक्षा है। जन्म के साथ हम एक जैविक लैंगिक पहचान लेकर पैदा होते हैं। वह जैविक पहचान हमारे जननांग के माध्यम से हमें नर या मादा प्रजाति से जोड़ती है। यह हमारी लैंगिक पहचान ही होती है कि हम ये जान पाते हैं कि हम आखिर हैं कौन? नर, मादा या कोई और? विश्व के सभी समाजों में उभयलिंगी समुदाय का भी एक वर्ग है जिसे किन्नर, हिजड़ा, थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, यूनक, खोजवा, मौगा, छक्का, खुसरा, जनखा, अनरावनी, शिखण्डी, ख्वाजासरा आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। आज हम 21वीं सदी में जी रहे है हमारे देश भारत में इस समुदाय के प्रति सजगता व संवेदनशीलता देखी जा रही है। **इन उभयलिंगी व्यक्तियों के अधिकारों का संरक्षण और कल्याण तथा आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने हेतु "उभयलिंगी व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) विधेयक, 2016" पारित कर भारत सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।**

नर और मादा से इतर समाज में उभयलिंगी व्यक्तियों का भी अस्तित्व है जिन्हें हम पारम्परिक यौन पहचानों के तहत समेट नहीं पाते। उभयलिंगी व्यक्तियों का यौन पहचान में फिट नहीं हो पाना ही इन्हें समाज से प्रथक कर देता है। समाज में अपनी उपयोगिता सिद्ध न कर पाने की पीड़ा इन्हें मानसिक रूप से तोड़ देती है। जब हम किसी भी प्रकार की शारीरिक विकलांगता को स्वीकार कर व्यक्ति को समाज से

बहिष्कृत नहीं करते तो फिर प्रश्न उठता है कि हम यौन विकलांगता होने के कारण इन्हें समाज से बहिष्कृत क्यों कर देते हैं?

सामाजिक स्वीकार्यता का न होना इनकी सामाजिक वेदना को बढ़ा देता है। ऐसा कौन सा कार्य है जो उभयलिंगी व्यक्ति नहीं कर सकता अथवा समाज की प्रगति में अपना योगदान नहीं दे सकता। आज हमारे समाज में उभयलिंगी समुदाय का एक बड़ा हिस्सा हाशिए पर जीवन व्यतीत कर रहा है। सामाजिक अस्वीकार्यता की वजह से, इनकी अशिक्षा भी अधिकारों की लड़ाई में इन्हें अक्षम बनाती है।

आज हिन्दी में इन उभयलिंगी व्यक्तियों सामान्यतः किन्नर कहकर संबोधित किया जाता है। मूलतः किन्नर समुदाय हिमालय में पाई जाने वाली किन्नौर जनजाति के लोगों का समुदाय है। किन्नौर जनजाति के लोगों को इन उभयलिंगी व्यक्तियों का किन्नर नाम से पुकारा जाना पसन्द नहीं है।

उभयलिंगी व्यक्तियोंको हम मुख्य रूप से चार भागों में विभक्त कर सकते हैं–**बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा**। **बुचरा** हिजड़े ही वास्तविक हिजड़े होते है। क्योंकि ये जन्मजात न पुरुष होते हैं न स्त्री। **नीलिमा** हिजड़े किसी कारणवश स्वयं हिजड़े बन जाते हैं। **मनसा** कोटि के हिजड़े तन के स्थान पर मानसिक तौर पर स्वयं को हिजड़े जैसा समझते हैं। इनको मनोवैज्ञानिक परामर्श द्वारा वास्तविक लिंग में भेजा जा सकता है। **हंसा** हिजड़े नपुसंकता अथवा यौन अक्षमता के कारण स्वयं को हिजड़ों से जोड़ लेते हैं, इनका चिकित्सक द्वारा इलाज कराया जाए तो इनमें से अधिकांश को सामान्य पुरुष अथवा स्त्री बनाया जा सकता है, ये भी सामान्य जिन्दगी जी सकते हैं। **अबुआ** उन हिजड़ों को कहा जाता है जो वास्तविक रूप से पुरुष होते हैं परन्तु ये धन के लालच मेंआकर हिजड़ा होने का नाटक करते हैं। **छिबरा** हिजड़े जो सामान्य रूप से पुरुष होते हैं परन्तु पारिवारिक रंजिश में इनका लिंग कटवा दिया जाता है।

21वीं सदी में एल,जी,बी,टी,क्यू की अवधारणा भी देखी जा रही है, जिसका तात्पर्य– लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर तथा क्वियर से है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जीने के लिए जिन मूलभूत वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह प्रत्येक मनुष्य केजीवनयापन के अधिकारों का महत्वपूर्ण हिस्सा है, परन्तु उभयलिंगी समुदाय आज भी इन अधिकारों से वंचित है। यह समुदाय मानव–विभेद का प्रतीक है,

जो इंसानी अधिकारों से मरहूम है, पर सामान्य जन के प्रत्येक शुभ कार्य में बधाई व आर्शीवाद देने के लिए उनके घर उपस्थित होता है। प्रश्न उठता हैयह वर्ग स्वयं के जीवन का अभिशाप झेलने के लिए मजबूर क्यों है? यह विषय इस बात को विचारने के लिए प्रेरित करता है कि कब उभयलिंगी समुदाय अपना हक पाएगा, कब यह शिक्षा का अधिकार पाएगा, कब अपनी जिन्दगी की समस्याओं से बरी होगा? आखिर कब.. ?

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन :– किसी भी विषय को शोध अध्ययन का साहित्य के आधार बनाने से पूर्व उसके सम्पूर्ण प्रतिमानों से अवगत होना पड़ता है। सन् 2008 में प्रकाशित "**अनुसूइया त्यागी**कृत"**"मैं भी औरत हूँ"**उपन्यास को जब मैंने पढ़ातो मुझे उभयलिंगी समुदाय के प्रति सहानुभूति जाग्रत हुयी व मेरा मन बेचैन हो उठा। उभयलिंगी समुदाय सदियों से अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। इसीलिए मैंने इस विषय का गहन अध्ययन करने का निश्चय किया।

जब मेरा चयन शोध छात्रा के रूप में हुआ तो मेरा मन उभयलिंगी समुदाय की समस्याओं और उनके समाधान को खोजने के लिए चिन्तित हो उठा। मैंने अपनी शोध निर्देशिका प्रो० शर्मिला सक्सेना से इस विषय पर बातचीत की उन्होंने मुझे इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। आपसी चर्चा के बाद मैंने**"प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम"** विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।शोध विषय के निर्धारण व रूपरेखा के निर्माण में मेरी शोध निर्देशिका प्रो० शर्मिला सक्सेना ने सहायता की। तदुपरान्त विषय से सम्बन्धित सामग्री के चयन हेतु मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, अम्बेडकर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट के पुस्तकालय को आधार बनाया तथा उभयलिंगी विमर्श से सम्बन्धित सन्दर्भित पत्रिकाओं का अध्ययन किया। इसके साथ ही संचार माध्यम इन्टरनेट से भी सामग्री संचयन हेतु मेरी निर्देशिका ने मेरी सहायता की।अपने गुरुजनों से भी मैंनेइस विषय पर चर्चा की तथा उसके उपरान्त **"प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम"** विषय पर शोधकार्य करने का निश्चय किया।

प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य :– प्रस्तुत विषय **"प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम"** में मेरे द्वारा उभयलिंगी समुदाय के जीवन–संघर्ष व समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयत्न किया जाएगा।

इस वर्ग को समाज ने स्वयं से प्रथक कर अभिशप्त जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया है। इस समुदाय की समाज द्वारा अवहेलना प्रारम्भ से ही होती आयी है। इस वर्ग को समाज ने हंसी का पात्र बना दिया है। मेरे द्वारा इस वर्ग के शापित जीवन की समस्याओं को परत दर परत खोलने का प्रयास किया जाएगा, इनके जीवन के कटु सत्य को व्यक्त करना तथा प्रस्तुत उपन्यासों के माध्यम से इस समुदाय की पीड़ा, संघर्ष, शोषण व समस्याओं को उजागर करना मेरे शोध कार्य का उद्देश्य होगा।

शोध विषय का महत्व :–

उभयलिंगी समुदाय की विविध विषमताओं को इन उपन्यासों में उकेरा गया है, जिसे पढ़कर मेरा मन उद्वेलित हो गया और मैंने इस विषय पर काम करने का निर्णय लिया। साहित्य की विविध विधाओं, कहानियों, उपन्यासों एवं नाटकों आदि में उभयलिंगी का चित्रण हुआ है। हिन्दी साहित्य में दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि **'पाण्डेय बेचैन शर्मा उग्र'** की कतिपय कहानियों में जिन लौंडेबाजों का जिक्र आता है, वे यही किन्नर हैं। साहित्य में थर्ड जेन्डर से सम्बन्धित यत्र–तत्र लिखा जाता रहा है, किन्तु उनके जीवन की समस्याओं को उजागर करने का कार्य प्रमुखता से आज **'उभयलिंगी विमर्श'** के द्वारा किया जा रहा है। **'उभयलिंगी विमर्श'** में हम किन्नरों के शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न के साथ–साथ उनकी शारीरिक व मनोवैज्ञानिक समस्याओं का भी अध्ययन करेंगे।

'नीरजा माधव'कृत **'यमदीप'** उपन्यास हिजड़ों पर रचित प्रथम स्वतन्त्र औपन्यासिक कृति है, जिसका प्रकाशन सन् 2002 में हुआ है।

'अनुसूया त्यागी'कृत उपन्यास **'मैं भी औरत हूँ'** हिजड़ों पर आधारित है। इस कृति में लेखिका ने उन लड़कियों की कथा को व्यक्त किया है जो जन्म से किन्नर हैं परन्तु उनके माँ–बाप उनसे इस बात को

छिपाते हैं। जब लड़कियों को अपने किन्नर होने की सच्चाई पता चलती है, तो उनके माता–पिता उन्हें टूटने नहीं देते, बल्कि चिकित्सक द्वारा ऑपरेशन कराकर उन्हें एक सामान्य जिंदगी प्रदान करते हैं।

'महेन्द्र भीष्म'कृत उपन्यास **'किन्नर कथा'** सन् 2011 में प्रकाशित हुआ, जिसमें लेखक ने किन्नरों की अधूरी देह होने की पीड़ा, सामाजिक उपेक्षा, पारम्परिक एवं पारस्परिक संघर्ष तथा उनमें व्याप्त अवसाद आदि को दर्शाने का सफल प्रयास किया है।

'प्रदीप सौरभ'कृत **'तीसरी ताली'** उपन्यास सन् 2011 में प्रकाशित हुआ, प्रस्तुत उपन्यास में उभयलिंगी के जीवन की विविध विषमताओं को खोलकर चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में हिजड़े समुदाय के घुटन भरे जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है।

सन् 2014 में प्रकाशित **'गुलाम मंडी'**उपन्यास में **'निर्मला भुराड़िया'** नेउभयलिंगी समुदाय के जीवन में व्याप्त तिरस्कार व अपमान के अलावा अन्य विषयों को भी उठाया है।

'चित्रा मुद्गल' कृत **'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा'** पत्रात्मक शैली में लिखित उपन्यास बहुचर्चित है। प्रस्तुत उपन्यास में उभयलिंगी समुदाय की वेदना, पीड़ा व समाज में उनके प्रति उपेक्षित रवैया एवं राजनीति में उनके उपयोग किए जाने की कथा को दर्शाया गया है। यह उपन्यास उभयलिंगी समुदाय का मनुष्य न समझे जाने की मानसिकता के प्रतिरोध को अभिव्यक्त करता है। यहाँ लेखिका संवेदना के गहन धरातल पर उतर कर माता–पिता एवं संतान के रिश्तों की आत्मीय ऊष्मा की तलाश करती नज़र आती हैं।

'महेन्द्र भीष्म' कृत **'मैं पायल...'**सन् 2016 में प्रकाशित आत्मकथात्मक उपन्यास है, जिसमें पायल और उभयलिंगी समुदाय की व्यथा, यातना और संघर्ष अभिव्यक्ति पाता है।

'भगवंत अनमोल' कृत **'जिन्दगी 50–50'** उपन्यास किन्नर समुदाय पर आधारित प्रसिद्ध उपन्यास है।

'सुभाष अखिल' कृत **'दरमियाना'** एवं **'गिरिजा भारती'**कृत **'अस्तित्व'** दोनों उपन्यास किन्नरों पर आधारित हैं।

उभयलिंगी समुदाय सामान्यतः लैंगिक विकलांगता का शिकार है। हमें उनके प्रति उदार और सहिष्णु होना होगा। उनकी अस्मिता और उनके अस्तित्व को स्वीकार करना होगा। इस संदर्भ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने एक सकारात्मक और सार्थक पहल की है, जहाँ उन्होंने विगत 15 अप्रैल 2014 में आलोच्य समाज को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (क) के तहत निजता और वैयक्तिक स्वतन्त्रता से सम्बन्धित सभी अधिकार दिए एवं केन्द्र तथा राज्य सरकारों को शीघ्रता से इस संबंध में कार्यवाही का आदेश दिया। इसके साथ ही उन्होनें इन्हें 'किन्नर समाज'एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के तहत विविध नौकरियों एवं शिक्षण संस्थानों में आरक्षण पाने का अधिकारी भी माना है।

सन् 1994 में लैंगिक विकलांगो को मतदान की मंजूरी दी गई थी, इससे किन्नरों के लिए राजनीति के रास्ते खुल गए। राजनीति के क्षेत्र में सफलता पाने वाली पहली किन्नर हरियाणा के हिसार की, शोभा नेहरू है, जो कि चुनाव में पार्षद चुनी गयी। श्री गंगानगर, राजस्थान में, किन्नर बसन्ती पार्षद बनी। मध्य प्रदेश में किन्नरों को राजनीतिक क्षेत्र में अच्छी खासी सफलता प्राप्त हुयी। मध्य प्रदेश में सन् 2002 में किन्नर विधायक, पार्षद व महापौर बने। देश की पहली किन्नर विधायक, शबनम मौसी, शाहडोल जिले से सुहागपुर विधान सभा सीट से चुनी गई। छत्तीसगढ़ प्रदेश के रायगढ़ जिले में सन् 2015 में निर्दलीय उम्मीदवार, किन्नर मधु ने मेयर का चुनाव जीता। 2017 में पृथिका याशिनी ने तमिलनाडु में पुलिस उपनिरीक्षक पद को सुशोभित किया। पश्चिम बंगाल की जोइता मंडल 8 जुलाई 2017 को देश की पहली किन्नर जज बनी।

अनुसंधान पद्धति :–बुद्धिजीवी प्राणी होने के कारण मनुष्य निरंतर जिज्ञासा व शोध में रत रहता है। उसकी यह प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान उनके जीवन के हर क्षेत्र में चलता रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष प्रकार की जागरुकता को लिए रहता है। श्रद्धा, लगन, निष्ठा व अथक परिश्रम से किया जाने के कारण अनुसंधान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेक पद्धतियाँ प्रचलन में है। मेरे शोध, **'प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम'**में सर्वेक्षण पद्धति के साथ विवेचनात्मक, वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धतियों का अवलोकन किया जाएगा। अन्त में सम्पूर्ण शोध विषय का निष्कर्ष दिया जाएगा।

प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य :–शोधकार्य हेतु किन्नर साहित्य पर मेरे द्वारा चयनित विषय **'प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम'** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। किन्नर साहित्य पर जिस किसी भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान व लघु शोध कार्य हुआ,यह मेरे शोधकार्य से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व उभयलिंगी साहित्य पर जिन विषयों को लेकर शोधकार्य किया गया है, उसकी सूची नीचे दी जा रही है। प्रस्तुत सूची के द्वारा यह सत्य निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिए हुए है।

1. **सामाजिक प्रतिरोध और हिन्दी उपन्यास**

   शोध छात्र – मनीष

   निर्देशक – प्रो० देवेन्द्र कुमार चौधरी

   जवाहर लाल नेहरूविश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2. **लैंगिक प्रश्नों के परिदृश्य में हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन**

   शोध छात्रा – नीलम

   शोध निर्देशिका – डॉ० परबिन्दर कौर

   जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

3. **पंजाबी कहानियों में किन्नरों का मनोविश्लेषण अध्ययन**

   शोध छात्र – मनमीत

   शोध निर्देशिका – प्रो० सुखविन्दर

   पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाब

प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति :–शोध विषय का अनुसंधान सुचारु रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजन होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय **'प्रतिनिधिहिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगीविमर्श के विविध आयाम'** को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रतिनिधि हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त उभयलिंगी विमर्श के विविध आयाम

प्रथम अध्याय –

- उभयलिंगी विमर्श : एक अध्ययन
- उभयलिंगी अर्थ, परिभाषा, एल,जी,बी,टी,क्यू, अवधारणा एवं स्वरूप
- उभयलिंगी समुदाय से सन्दर्भित सरकारी नीतियाँ एवं योजनाएँ

द्वितीय अध्याय –

- प्रतिनिधि उभयलिंगी उपन्यासकारों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक परिचय

1. नीरजा माधव – यमदीप (2002)
2. अनुसूया त्यागी – मैं भी औरत हूँ (2008)
3. महेन्द्र भीष्म – किन्नर कथा (2011)
4. प्रदीप सौरभ – तीसरी ताली (2011)
5. निर्मला भुराड़िया – गुलाम मंड़ी (2014)
6. चित्रा मुद्गल – पोस्ट बॉक्स न0–203 नाला सोपारा (2016)
7. महेन्द्र भीष्म – मैं पायल (2016)
8. भगवंत अनमोल – जिन्दगी 50–50 (2017)
9. सुभाष अखिल – दरमियाना (2018)
10. गिरिजा भारती – अस्तित्व (2018)

तृतीय अध्याय –

- प्रतिनिधि उभयलिंगी उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विडम्बना।

चतुर्थ अध्याय –

- प्रतिनिधि उभयलिंगी उपन्यासों में व्यक्त धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक विडम्बना।

पंचम अध्याय – प्रतिनिधि उभयलिंगी उपन्यासों में भाषा, शिल्प एवं पात्र योजना

- भाषागत वैशिष्ट्य (शब्दगत–प्रयोग, भाषागत प्रयोग)
- शिल्पगत वैशिष्टय
- पात्र योजना एवं चरित्र चित्रण

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ

पत्रिकाएं एवं कोश

शोधार्थिनी

मोहिनी गुप्ता

आधार ग्रन्थ

1. यमदीप : नीरजा माधव, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, संस्करण 2018
2. मैं भी औरत हूँ: डॉ. अनुसूया त्यागी, परमेश्वरी प्रकाशन, संस्करण 2011
3. तीसरी तालीः प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011
4. जिन्दगी 50–50: भगवंत अनमोल, राजपाल प्रथम संस्करण 2017
5. दरमियानाः सुभाष अखिल, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2018
6. अस्तित्व : गिरिजा भारतीय, विकास प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण 2018
7. पोस्ट बॉक्स नं0–203 नाला सोपराः चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली पहला संस्करण 2016
8. गुलाम मंडीः निर्मला भुराड़िया, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2014।
9. मैं पायलः महेन्द्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानुपर, प्रथम संस्करण 2016
10. किन्नर कथाः महेन्द्र भीष्म, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016

सहायक ग्रन्थ

1. विमर्श का तीसरा पक्ष, डॉ0 विजेन्द्र प्रताप सिंह, रविकुमार गोंड़, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016
2. भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, डॉ0 विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गोंड़, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2016
3. किन्नर विमर्श साहित्य के आइने में, डॉ0 इकरार अहमद, वाड्मय बुक्स अलीगढ़ 2017
4. हिन्दी उपन्यासों के आइने में थर्ड जेंडर, डॉ0 विजेन्द्र प्रताप सिंह, अमन प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2017
5. थर्ड जेंडर : कथा आलोचन, डॉ0 एम. फीरोज खान, अनुसंधान पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, कानपुर प्रथम संस्करण, 2017

6. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, 1986
7. हिन्दी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2009
8. किन्नर विमर्श : साहित्य और समाज, मिलन विश्नोई, विद्या प्रकाशन संस्करण 2018
9. अस्तित्व और पहचान (थर्ड जेंडर पर केन्द्रित कविता संग्रह), विजेन्द्र प्रताप सिंह, अमन प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2018

पत्रिकाएँ

1. जनकृति (थर्ड जेंडर विशेषांक), कुमार गौरव मिश्रा, अमित मिश्र वर्धा, मासिक–पत्रिका, अगस्त 2016
2. निरुप्रह (किन्नर विमर्श पर विशेषांक) अरविन्द कुमार, अनंग प्रकाशन, दिल्ली त्रैमासिक फरवरी 2016
3. वाङ्मय (थर्ड जेंडर : कथा आलोचना), डॉ. एम फीरोज दअहमद, अलीगढ़, त्रैमासिक अगस्त 2017
4. अनुसंधान (थर्ड जेंडर विशेषांक) डॉ. शगुफ़्ता नियाज़, अलीगढ़ त्रैमासिक शोध पत्रिका जुलाई–दिसम्बर 2018